

रामस्वरूप चतुर्वेदी की दृष्टि में कबीर और तुलसी

*अरुणा कुमारी

*पूर्व शोधार्थी, हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

Received: January 11, 2026

Accepted: February 22, 2026

शोध सार

रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार 'रचना जीवन के अर्थ का विस्तार करती है और आलोचना रचना के अर्थ का।' इस तरह से देखें तो जिस तरह से रचना में 'झूठ सच' की कोई गुंजाइश नहीं रहती, उसी प्रकार आलोचना में भी 'झूठ सच' की कोई जगह नहीं होती। रचनाकार जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान करता है और आलोचक रचना के यथार्थ को। जिस प्रकार 'झूठ सच' की आसक्ति से मुक्त होकर ही 'महाकवि' बना जा सकता है, उसी प्रकार 'आलोचक' के लिए रचना से इतर के प्रतिमानों से मुक्त होकर रचना के भीतर के सच को उद्घाटित करने का दायित्व होता है।

बीज शब्द : रसास्वादन, धर्म निरपेक्ष, अद्वैत दर्शन, सूफी परंपरा, भारतीय प्रतीक-विधान ।

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने 'महाकवि' के बारे में लिखा है-

कवि सो प्रेम तंत कबिराजा।

झूठ साँच जेहि करत न साजा।।

अर्थात् महाकवि वही है जो प्रेम तत्त्व के अनुसार काव्य-रचना करे और जिसे झूठ सच कहने में आसक्ति न हो। मतलब साफ़ है कि रचना के लिए रचनाकार को जीवन के सच का सहारा लेना पड़ता है, झूठ का नहीं। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार 'रचना जीवन के अर्थ का विस्तार करती है और आलोचना रचना के अर्थ का।' इस तरह से देखें तो जिस तरह से रचना में 'झूठ सच' की कोई गुंजाइश नहीं रहती, उसी प्रकार आलोचना में भी 'झूठ सच' की कोई जगह नहीं होती। रचनाकार जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान करता है और आलोचक रचना के यथार्थ को। जिस प्रकार 'झूठ सच' की आसक्ति से मुक्त होकर ही 'महाकवि' बना जा सकता है, उसी प्रकार 'आलोचक' के लिए रचना से इतर के प्रतिमानों से मुक्त होकर रचना के

भीतर के सच को उद्घाटित करने का दायित्व होता है। जो आलोचक ऐसा कर पाने में समर्थ होता है, वह चिरकाल तक स्मरणीय होता है और 'महान आलोचक' कहलाने का अधिकारी होता है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी हिंदी के उन आलोचकों में से रहे हैं जिन्होंने रचना के सच के आलावा किसी भी प्रकार के साहित्येतर सच को आलोचना में महत्व नहीं दिया। कहा जा सकता है कि उन्हें आलोचना के लिए 'झूठ सच' कहने में कोई आसक्ति नहीं रही है। यही कारण है कि उनकी आलोचना ज्यादा विश्वसनीय और प्रामाणिक लगती है। इस विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के निर्माण में उनकी मेधा और तटस्थता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपने इन्हीं गुणों के कारण हिंदी के प्रायः सभी बड़े कवियों की भावभूमि को काफी गहराई तक जाकर उन्होंने समझने और समझाने का प्रयास किया है। यही कारण है कि इनकी आलोचनात्मक कृतियों को पढ़ते हुए पाठक मूल कृति का रसास्वादन समुचित रूप से कर पाता है।

दूधनाथ सिंह ने रामस्वरूप चतुर्वेदी को आधुनिक काल का 'मास्टर आलोचक' कहा है। बहुत हद तक उनकी बात सही भी लगती है, लेकिन इसे पूर्णतः सत्य नहीं माना जा सकता। ये सच है कि रामस्वरूप जी ने अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में आदिकालीन और मध्यकालीन साहित्य पर बहुत कम लिखा है और आधुनिक साहित्य पर अधिक। लेकिन महज इस कारण से उन्हें सिर्फ आधुनिक काल का आलोचक कहकर सीमित करना उचित नहीं लगता। काव्यभाषा के जिस प्रतिमान को लेकर उन्होंने आधुनिक साहित्य के मूल्यांकन की बात कही थी, वह सिर्फ आधुनिक काल तक ही सीमित नहीं है। उसकी व्याप्ति वे मध्यकालीन साहित्य तक देते हैं। 'मध्यकालीन हिंदी काव्यभाषा' और 'भक्तिकाव्य यात्रा' जैसी कृतियाँ इसके प्रमाण हैं। इन दो पुस्तकों के अलावा 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में भी उनकी भक्ति साहित्य से सम्बंधित टिप्पणी संक्षेप में ही सही, पर उनकी दृष्टि को उजागर करने में सक्षम है। भक्तिकाल के चारों महत्वपूर्ण कवियों- कबीर, सूर, तुलसी, मीरा और जायसी पर उन्होंने न केवल विस्तार से लिखा है, बल्कि इन महत्वपूर्ण कवियों को समझने की नयी दृष्टि भी दी है। कह सकते हैं कि उन्होंने अपनी आलोचना के द्वारा इन कवियों की रचनाओं को विस्तार दिया है, जिसे आलोचना की मूलभूत विशेषता माना जाता है। 'भक्ति-काव्य' की समालोचना हिंदी के सभी प्रमुख आलोचकों ने करते हुए इसके महत्व को रेखांकित किया है। रामस्वरूप जी ने भी भक्तिकाव्य को एक अलग दृष्टि से देखा है और माना है कि भक्ति-काव्य हिंदी समाज की उदारतम चेतना का दस्तावेज़ है। कबीर-जायसी-सूर-तुलसी-मीराँ इस युग के श्रेष्ठ कवि हैं, यह मान्यता सर्वस्वीकृत है। इसका निहितार्थ है कि यहाँ हिन्दू-मुसलमान, ब्राह्मण-दलित, पुरुष-स्त्री-समाज के सभी वर्गों का यह साझा रचना-कर्म है, भले वे वर्ग सामान्य तौर पर समाज में अपना अलगाव बनाये रखते हों। यों हिंदी जीवन की व्यापक समरसता का अन्यतम प्रमाण है हिंदी भक्ति-काव्य। यह भक्ति-काव्य के सन्दर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी की मौलिक दृष्टि है। इसे उन्होंने भक्तिकाल के सभी प्रमुख कवियों के सन्दर्भ में रेखांकित किया है। इसलिए कबीर को हिन्दू या मुसलमान से इतर 'भाखा का पहला बड़ा कवि' मानते हैं और जायसी को हिंदी का श्रेष्ठ धर्मनिरपेक्षकार कवि। भक्ति से कविता बनाने की जो प्रक्रिया वे कबीर से

मानते हैं, उसकी निष्पत्ति उन्हें तुलसी में दीखती है। इस क्रम में उन्हें 'कबीर ऊपर से अक्खड़ पर अन्दर से भोले और सरल' लगते हैं और 'तुलसी ऊपर से विनयी पर अन्दर से जटिल और व्यवहार-कुशल'। सूर में उन्हें 'जीने की चाह' दीखती है जिससे वे उन्हें 'पूरी तरह से गार्हस्थ-मानस का कवि' मानते हैं, तो मीरा की कविता में उन्हें 'कविता और व्यक्तित्व का तादात्म्य' दीखता है।

कबीर और तुलसी हिंदी के दो बड़े कवि हैं। यही कारण है कि हिंदी के प्रायः सभी महत्वपूर्ण आलोचकों ने इनको अपनी दृष्टि से जानने और समझने का प्रयास किया है। पर ध्यान से देखने पर उनमें से अधिकांश पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्पष्ट प्रभाव दिखायी पड़ता है। हिंदी के जिन महत्वपूर्ण आलोचकों ने उपर्युक्त आलोचकों से प्रभाव ग्रहण करते हुए भी इन बड़े कवियों को देखने की एक नूतन दृष्टि दी है, उनमें रामस्वरूप चतुर्वेदी का भी स्थान महत्वपूर्ण है। उन्होंने न केवल कबीर और तुलसी बल्कि मीरा और जायसी को भी नये ढंग से विश्लेषित और मूल्यांकित किया है। 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में उन्होंने कबीर के बारे में जो लिखा है, वह इस महान कवि की भावभूमि को स्पर्श करने में पूरी तरह से सक्षम हुआ है। कबीर के बारे में उन्होंने लिखा है-कबीर बड़े कवि वहाँ हैं जहाँ वे अपने ही अंतर्जगत का वैविध्य संधान करते हैं और उसी से जीवन की विराटता सिरजते हैं। तुलसी के सन्दर्भ में कवि की भावुकता की जो कसौटी रामचंद्र शुक्ल ने निर्धारित की है, प्रबंधकार कवि की भावुकता का सबसे अधिक पता यह देखने से चलसकता है कि वह किसी आख्यान के अधिक मर्मस्पर्शी स्थलों को पहचान सका है या नहीं। वह कबीर के लिए प्रयुक्त नहीं हो सकती। बाहर के वृत्त के अभाव में वे सभी मनोदशाएँ जो कभी-कभी एक-दूसरे के विरुद्ध जाती हैं, कवि अपने भीतर ढूँढता है। अपेक्षाकृत कम सामग्री से अपेक्षाकृत अधिक की रचना उसे करना है। स्पष्ट ही यह अधिक कठिन कवि-कर्म है जिसका निर्वाह कबीर ने किया है।

रामस्वरूप जी ने 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में कबीर के जिन दोहों और पदों को शुरुआत में ही उद्धृत किया है, उनमें कबीर की निरासक्तता, निर्भीकता, निर्लोभ, समर्पण, ईमानदारी एवं अतिशय आध्यात्मिक अनुराग दृष्टिगत होता है। कबीर का काव्य भले शास्त्र के सिद्धान्तों पर खरा न उतरे, पर अपनी स्पष्ट भावाभिव्यक्ति एवं आत्मीयता के कारण जितने सहज ढंग से पाठकों को हृदयंगम हो जाता है, उतना बहुत ही कम कवियों का हो पाता है। जिस प्रकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास के परिवर्द्धित और संवर्द्धित संस्करण में कबीर की प्रखर बुद्धिमत्ता को पहचाना है, उसी तरह आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने उन्हें भाषिक संवेदनात्मक विस्तार के आधार पर श्रेष्ठ कविसिद्ध किया है। उनके अनुसार कबीर के रचनाकार व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता 'भाखापन' के प्रति उनका गहरा आत्मविश्वास-भाव है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भी कबीर की भाषा की तरफ़दारी करते हैं। जहाँ वे कबीर की भाषा की तरफ़दारी करते हैं, वहीं तुलसी को लोकनायक मानने से इंकार नहीं कर पाते। कहने का तात्पर्य यह कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की तरह आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने भी कबीर और तुलसी को सही परिप्रेक्ष्य में देखा है। कबीर को न समझने का एक महत्वपूर्ण कारण वे उन्हें समाजसुधारक के रूप में प्रस्तुत करने को मानते

हैं। ठीक उसी तरह तुलसी को वर्णाश्रम के संस्थापक के रूप में मानने को तुलसी की आलोचना की सीमा मानते हैं। जहाँ तक कवि को समझने की बात है, तो उसके लिए वे कवि के भावात्मक मार्मिक परिप्रेक्ष्य को महत्वपूर्ण मानते हैं, जो उसके मुक्त हृदय की पहचान होती है।

हिंदी में कबीर पर सूफी-संप्रदाय के प्रभाव को लक्षित करने की एक लम्बी परंपरा रही है। रामस्वरूप जी इसकी शुरुआत 'हंड्रेड पोयम्स ऑफ कबीर' की भूमिका से मानते हैं। इसे वे स्वीकार नहीं कर पाते। इस सन्दर्भ में उन्होंने जो लिखा है, वह द्रष्टव्य है, आलोचना जगत में यह सुविदित है कि सूफी परंपरा प्रेमास्पद को परम तत्त्व के रूप में देखती है और साधक को प्रेमी रूप में। मलिक मोहम्मद जायसी की प्रसिद्ध कृति 'पद्मावत' में पद्मावती परम तत्त्व का रूप है, और रत्नसेन पहले प्रेमी, फिर पति का। भारतीय परंपरा इसके विपरीत है-यहाँ आत्मा यानी कि साधक अपने को प्रेमी-प्रेमिका रूप में देखता है, परमात्मा पति-रूप है। कबीर इस भारतीय प्रतीक-विधान को ही अपनाते हैं- 'हरि मोरा पिउ में हरि की बहुरिया' या कि 'दुलहिनी गावहु मंगलचार। हम घरि आए राजा राम भरतार। कोई भी रचनाकर अपने लिए वैचारिक पोषण विविध सांस्कृतिक-दार्शनिक परम्पराओं से लेता है; यह उसकी व्यापक दृष्टि का कारण और प्रमाण दोनों है। पर मुख्य बात उसके रचना-विधान की है, जहाँ यह समझना होता है कि उसकी अपनी रचना-युक्तियाँ क्या हैं? कबीर की रचना-युक्ति यहाँ स्पष्ट ही भारतीय परंपरा के अनुकूल है, न कि सूफी परंपरा के। फिर, उक्त आलोचना-सरणि में यह बात भी भुला दी जाती है कि सूफी विचार-परंपरा स्वयं भारतीय अद्वैत दर्शन की कितनी ऋणी है। स्पष्ट है कि रामस्वरूप जी कबीर पर सूफी परंपरा के प्रभाव को उस रूप में स्वीकार नहीं करते, जिस रूप में 'हंड्रेड पोयम्स ऑफ कबीर' की भूमिका में स्वीकार किया है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार 'बड़े कवि की एक पहिचान यह हो सकती है कि वह विरोधी परिस्थितियों और मनःस्थितियों के कितने युग्मों को परस्पर आमने-सामने रखकर उनका अंकन करता है।' इस दृष्टि से कबीर उनकी दृष्टि में बड़े कवि हैं क्योंकि उनकी कविताओं में विरोधी परिस्थितियों और मनःस्थितियों का अनेक रूपों में अंकन हुआ है। उनके अनुसार इस मामले में कबीर तुलसी से भी आगे निकल जाते हैं।

कबीर और तुलसी से सम्बंधित आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी के विवेचन- विश्लेषण को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि उन्होंने इस विवेचन से न केवल कबीर और तुलसी के कुछ अनछुए पहलुओं को उजागर किया है, बल्कि कबीर के सम्बन्ध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतों को भी समझनेकी दृष्टि दी है। रामस्वरूप जी का कथन है, कवि का काम यदि 'दुनिया में ईश्वर के कामों को न्यायोचित ठहराना है टी साहित्य के इतिहासकार का काम है कवि के कामों को साहित्येतिहास की विकास-प्रक्रिया में न्यायोचित दिखा सकना। इस तरह से देखें तो आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपने सुचिंतित विवेचन से कबीर और तुलसी के कामों को अपनी आलोचना के माध्यम से न्यायोचित ठहराने की सफल कोशिश की है। इस विवेचन में हम पाते हैं कि कबीर ने उबड़-खाबड़ धरातल को जिस साहस और पराक्रम से चौरस और सपाट बनाया था, उसी पर तुलसी ने अपना बहुरंगी चकाचौंध से परिपूर्ण बहुमंजिला इमारत खड़ी

की है। दार्शनिक पृष्ठभूमि पर कबीर ने राम से जिस आत्यंतिक अनुराग का चित्रण किया है, तुलसी उसके सन्निकट दिखायी देते हैं। कबीर और तुलसी दोनों ने भक्ति के लिए जिस महत्वपूर्ण तत्त्व की बात की है, वह है- प्रेम। कबीर ने लिखा है-

निरबैरी निहकामता सांई सेती नेह।

वहीं तुलसी लिखते हैं-

रामहि केवल प्रेम पियारा।

तात्पर्य यह है कि इन दो संत कवियों का उद्देश्य मनसा, वाचा, कर्मणा भगवत भजन था। इस मार्ग में जो बाधक तत्त्व थे उसे इन्होंने तिरस्कृत किया। कबीर का विरोध थोड़ा आक्रामक था, तो तुलसी का थोड़ा समझौतावादी। आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपनी 'भक्तिकाव्य यात्रा' पुस्तक में भक्ति के इस उद्देश्य को पहचानने का प्रयास किया है। जिस तरह भक्तिकालीन कवियों को लगता है कि भक्ति के सागर में डुबोकर ही समाज की सारी विसंगतियों को दूर किया जा सकता है, उसी प्रकार रामस्वरूप जी ने संकेतित किया है कि भक्तिकाल में एक तरफ जायसी मुसलमान होने के बावजूद हिन्दू राजा की महिमा का बखान करता है, मीरा राजपूतानी होकर संत रविदास को अप्पन गुरु बनाती है। कबीर का तो पता ही नहीं वे हिन्दू थे या मुसलमान। मगर इतना ज़रूर पता है कि वे एक सच्चे इंसान थे। तुलसी को भी कम नहीं सहना पड़ा। कोई उन्हें धूत, तो कोई अवधूत कहता था। निष्कर्ष यह कि मन यदि दर्पण की तरह स्वच्छ हो जाय तो उस पर पड़ने वाली छाया भी स्पष्ट होती है। भक्तिकालीन कवि अपनी आध्यात्मिक यात्रा में हंस की तरह नीर-क्षीर विवेक को आत्मसात किया है। बुद्धि सम्मत अध्ययन करने पर उपर्युक्त कवियों में अनेक विरोध देखने को मिल सकते हैं, या मिलते हैं। पर पूर्वग्रह से मुक्त होकर देखने पर इनमें कोई अंतर्विरोध हमें नहीं दिखायी देता। कबीर के समय में शीघ्र आये मुसलमानों की वजह से हिन्दू समाज में काफ़ी उथल-पुथल था। ऐसे समय में समाज को कवि जैसे व्यक्तित्व की ही ज़रूरत थी। धीरे-धीरे परिस्थितियाँ बदलने लगीं। मुसलमान नरम हुए तो हिन्दू मिलनसार। दोनों के बीच की खाई पटने लगी। जिसका नतीजा हुआ कि तुलसी ने 'रामचरितमानस' जैसे उदात्त कृति की रचना की। कबीर और तुलसी भक्तिकालीन समाज के मेरुदंड हैं। किसी एक को भी इधर-उधर करने से तत्कालीन समय में 'आलोचक' की श्रेणी में तो आ सकते हैं, लेकिन 'समालोचक नहीं बन सकते। रामस्वरूप जी ने कबीर और तुलसी सम्बन्धी अपने विवेचन में 'आलोचक' नहीं 'समालोचक' बनने की कोशिश की है। इसलिए कबीर और तुलसी से सम्बंधित रामस्वरूप चतुर्वेदी का अध्ययन और विवेचन न केवल सराहनीय है, बल्कि मूल्यवान भी है।

सन्दर्भ :

1. भक्तिकाव्य यात्रा, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011
2. मध्यकालीनहिन्दीकाव्यभाषा, रामस्वरूप चतुर्वेदी, 1974

3. इतिहासऔरआलोचक-दृष्टि, रामस्वरूप चतुर्वेदी, 1982
4. हिन्दीसाहित्यऔरसंवेदनाकाविकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, 1986
5. जायसी, विजयदेव नारायण साही, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1993
6. कवीर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, 2022
7. जायसी ग्रंथावली, रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, 2007

